प्रश्नावली के गुण या लाभ
(Merits or Advantages of questionnaire)

1. समय तथा श्रम की बचत (Time and labour saving)—अनेक उत्तरदाताओं या सूचनादाताओं (respondents) को एक ही साथ प्रश्नावली दे दी जाती है और वे सीमित समय के भीतर उसे भरकर वापस कर देते हैं। अध्ययनकर्ता को वहाँ उपस्थित रहना आवश्यक नहीं होता है। इस प्रकार बहुत थोड़े समय में तथा थोड़े श्रम में आवश्यक सूचना प्राप्त करना संभव होता है। यह गुण साक्षात्कार, आदि विधियों में नहीं है।

2. कमखर्च (Economical)—साक्षात्कार-विधि या निरीक्षण-विधि की तुलना में प्रश्नावली कर्म खर्च विधि है। कारण, यहाँ अध्ययन करने वाले को व्यक्तिगत रूप में सूचनादाताओं से मिलने की आवश्यकता नहीं होती है। अधिक लम्बे समय तक अध्ययन को जारी रखने की जरूरत नहीं होती है।

3. विस्तृत क्षेत्र (Wider area)—इस विधि का क्षेत्र काफी व्यापक है। अधिक दूरी पर रहने वाले सूचनादाताओं से डाक-प्रश्नावली (mail questionnaire) द्वारा सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती हैं। यह सुविधा साक्षात्कार-विधि या किसी भी अन्य विधि में नहीं है। इसी तरह कुछ ऐसी सूचनाएँ हैं जो निरीक्षण-विधि या साक्षात्कार-विधि से प्राप्त करना संभव नहीं है, परन्तु प्रश्नावली से संभव है। जैसे—स्वप्नों, समजातिलैंगिता (homosexuality), हस्तमैथुन (masturbation) या वैवाहिक जीवन से सम्बन्धित सूचनाएँ प्रश्नावली से प्राप्त करना संभव है। ऐसी हालत में सूचनादाताओं के नाम तथा पता को गुप्त रखना पड़ता है।

4. स्वाभाविकता (Naturalism)—प्रश्नावली को भरते समय अध्ययन करने वाला उत्तरदाता के सामने उपस्थित नहीं होता है। अतः उत्तरदाता के मानस पर कोई दबाव (pressure) नहीं पड़ता है। वातावरण स्वाभाविक रहता है। इसलिए उसके उत्तर भी स्वाभाविक होते हैं। साक्षात्कार में यह गुण नहीं है।

5. यथार्थता (Realism)—प्रश्नावली में अध्ययन-परिस्थिति वास्तविक होती है। कारण, अध्ययन करने वाला अनुपस्थित रहता है। सूचनादाता स्वाभाविक रूप से उत्तर देता है। इसलिए, यथार्थ सूचना प्राप्त होने की अधिक संभावना रहती है। यह गुण साक्षात्कार में नहीं है।

6. पक्षपातरहित (Free from biases)—प्रश्नावली में उत्तरदाता के सामने अध्ययन करने वाला उपस्थित नहीं होता है। इसलिए, उसके द्वारा दिये गये उत्तरों के विश्लेषण एवं व्याख्या पर अध्ययनकर्ता की पूर्वधारणाओं (prejudices), पूर्वअनुभवों (past experiences), आदि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। लेकिन, साक्षात्कार या निरीक्षण इस दोष से मुक्त नहीं है।

Scanned with CamScanner

दोष या अलाभ (Demerits, Disadvantages or Limitations)

प्रश्नावली के कई गुणों की चर्चा ऊपर की गयी है। फिर भी इसमें निम्नलिखित दोष हैं—

1. आत्मनिष्ठता (Subjectivity)—प्रश्नावली की एक मौलिक कमजोरी (weakness) यह है कि यह आत्मनिष्ठ विधि है। प्रश्नावली भरते समय इस बात की पूरी सम्भावना रहती है कि सूचनादाता सही बात को छिपा ले और गलत सूचना दे दे। ऐसी हालत में अध्ययन की विश्वसनीयता (reliability) तथा वैधता (validity) घट जाती है।

2. अप्रत्यक्ष अध्ययन (Indirect study)—प्रश्नावली द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से सूचनाएँ प्राप्त की जाती हैं। प्रश्नावली भरते समय सूचनादाताओं के सामने अध्ययन करने वाला उपस्थित नहीं रहता है। इसलिए, इस बात की संभावना अधिक रहती है कि वे गलत सूचना दे दें तथा एक-दूसरे से पूछताछ करके उत्तर भर दें। डाक-प्रश्नावली में इसकी संभावना और भी अधिक रहती है। साक्षात्कार में यह दोष नहीं है।

3. प्रश्नों की अस्पष्टता (Ambiguity of questions)—प्रश्नावली में यदि कोई अस्पष्ट प्रश्न हो या अस्पष्ट शब्द हो तो उसको स्पष्ट करने के लिए अध्ययनकर्ता वहाँ उपस्थित नहीं रहता है। फलतः सूचनादाता उन प्रश्नों के उत्तर नहीं देते हैं या अनुमान से उनके उत्तर लिख देते हैं। फलतः प्राप्त सूचना गलत हो जाती है। यह कठिनाई साक्षात्कार-विधि में नहीं है।

4. सीमित सूचनादाता (Limited respondents)—प्रश्नावली का व्यवहार केवल शिक्षित वयस्कों पर किया जा सकता है, अशिक्षित वयस्कों तथा बच्चों पर नहीं। इसके अलावा अधिक व्यस्त तथा नफासत वाले लोग प्रश्नावली को भरना पसन्द नहीं करते हैं। इस प्रकार प्रश्नावली इमानदारी तथा लगन के साथ भरने वालों की संख्या बहुत कम होती है।

5. आंशिक वसूली (Partial recovery)—डाक द्वारा जो प्रश्नावलियाँ भेजी जाती हैं, वे सभी वापस नहीं लौटाई जाती हैं। कभी-कभी नहीं लौटानेवाली प्रश्नावलियों का प्रतिशत 75% तक होता है। ऐसी हालत में आर्थिक क्षति के साथ-साथ अध्ययन विलंबित हो जाता है।

6. आंशिक रूप से भरी गयी प्रश्नावली (Partly filled in questionnaire)—कुछ सूचनादाता प्रायः प्रश्नावली को पूरी तरह नहीं भरते हैं। जहाँ कहीं उन्हें कठिनाई महसूस होती है या किसी शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता है, या वाक्य का अर्थ स्पष्ट नहीं होता है, तो वे उसका उत्तर ही नहीं भरते हैं। इस प्रकार वे अन्त में प्रश्नावली को अधूरा ही लौटा देते हैं। चूँकि अध्ययनकर्ता वहाँ उपस्थित नहीं होता है, इसलिए उसे इसकी कोई जानकारी नहीं हो पाती है। अतः उत्तरों के विश्लेषण के समय अध्ययनकर्ता को बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

स्पष्ट है कि प्रश्नावली में कई तरह के दोष हैं। अतः सामाजिक समस्याओं के अध्ययन में इस विधि का व्यवहार सावधानी के साथ करना चाहिए और वह भी एक सहायक विधि के रूप में।

Scanned with CamScanner